



## 118101 - सुन्नियों और शियाओं के बीच मैत्री संभव नहीं है

---

### प्रश्न

राफिज़ा (शिया) के इतिहास के प्रति आपके ज्ञान के माध्यम से, अहले सुन्नत और उन के बीच मैत्री और निकटता पैदा करने के सिद्धांत के बारे में आपका क्या रुख है ?

### विस्तृत उत्तर

हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान केवल अल्लाह तआला के लिए योग्य है।

उत्तर :

हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान केवल अल्लाह के लिए योग्य है।

"राफिज़ा और अहले सुन्नत के बीच मैत्री और मेल-मिलाप संभव नहीं है ; क्योंकि अक्रीदा (आस्था) विभिन्न है, चुनांचे अहले सुन्नत व जमाअत का अक्रीदा (मूल सिद्धांत) अल्लाह की तौहीद (एकेश्वरवाद), और इबादत (पूजा व उपासना) को एकमात्र अल्लाह के लिए विशिष्ट करना है, और यह कि उसके साथ किसी को भी न पुकारा जाए, न किसी निकटवर्ती फरिश्ते को, न किसी भेजे हुए सन्देश को, और यह कि अल्लाह सर्वशक्तिमान ही केवल परोक्ष चीजों का ज्ञान रखता है। तथा अहले सुन्नत के अक्रीदा में से सभी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से महब्वत करना, उनके लिए अल्लाह की प्रसन्नता की दुआ करना (अर्थात उनका नाम आने पर रज़ियल्लाहु अन्हुम कहना), तथा यह आस्था रखना है कि वे पैगंबरों के बाद सबसे बेहतर लोग हैं, और यह कि उनमें सबसे प्रतिष्ठावान अबू बक्र सिद्दीक, फिर उमर, फिर उसमान, फिर अली रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन हैं। जबकि राफिज़ा का अक्रीदा इसके विपरीत और विरुद्ध है। इसलिए दोनो के बीच गठबंधन और मेल-मिलाप संभव नहीं है। जिस तरह कि यहूदियों, ईसाइयों, मूर्तिपूजको के बीच और अहले सुन्नत के बीच मेल-मिलाप संभव नहीं है, तो उसी तरह राफिज़ा के बीच और अहले सुन्नत के बीच भी मैत्री और मेल-मिलाप संभव नहीं है क्योंकि अक्रीदे की वह विभिन्नता पाई जाती है जिसको हम ने स्पष्ट किया है।" अंत हुआ।